Journal of Research in Education

(A Peer Reviewed and Refereed Bi-annual Journal)

(SJIF Impact Factor 5.573)

St. Xavier's College of Education

(Autonomous)

Digha Ghat, Patna, Bihar - 800011

VOL.12, No.1 | JUNE, 2024

- *Jafarov, J. (2015) Factors Affecting Parental Involvement in Education: The Analysis of Literature. Khazar Journal of Humanities and Social Science. Volume 18, Number 4 2015.*
- *Kumar, R.R.(2019). Parental Involvement and Attitude of Higher Secondary School Students towards Sex Behaviour Drugs and Alcohol Abuse A Study. Shodh ganga a reservoir of Indian these. http:hdl.handle.net/10603/475387 (http:handle.net/10603/47538)*
- *Padmakala, S. (2018). Parental support on self confidence and academic achievement of Higher Secondary Students. Department of Education, Manonmaniam Sundaranar University. http:// hdl.handle.net/10603/231348,. Retrieve from https:// shodhganga. Inflibnet.ac.in:8443/jspuri/handle/10603/231348*
- *Paul, P. (2020). Social Intelligence and Adjustment of Secondary School Students. Unpublished Thesis. Aryabhatta Knowledge University, Patna.*
- *Purohit B. & Patel I. (2022) Attitude of tribal parents towards education of their children in relation to literacy and socioeconomic status. International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT) www. Ijcrt.org. 2022 IJCRT Volume 10, Issue 6June 2022/ ISNN: 2320-2882s*
- *Sharma, S. P. K.K.N., (2022) Parental Involvement in Secondary Education among Secondary School Going Tribal Children in Sidhi District of Madhya Pradesh, India. Academic Journal, Journal? of Anthropology Vol 18, Issue2, p369 ISSN 1973- 2880. Retrieved from https://openurl.ebsco.com/ EPDB%3Agcd% 3A5%3 A14936917/detailv2?sid= ebsco%3 Aplink%3 Ascholar & id= ebsco%3 Agcd%3 A161536986 & crl=c 2/27/2024 3:37:54 PM*
- *Suman, S.(2019). Scientific Attitude Interest Process Skills and Achievement in Science of Secondary School Students. Unpublished Ph.D. Thesis. School of Educational Training & Research . Aryabhatta Knowledge University, Patna.*
- *Yildiz,M.&Kizitlog,Y.(2018). The Attitude of Secondary School Students towards School and Reading: A comparison In terms of Mother Tongue Gender and Class Level. International Journal of Education & Literacy Studies Volume: 6 Issue:1 www.Ijels.Aiac.Org.ans.*

डॉ0 माधुरी कुमारी
सहायक प्राध्यापिका
शिक्षा शास्त्र विभाग (एम. एड.)
भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय,
मधेपुरा, बिहार
madhurikumari1980@gmail.com

7

उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन: सहरसा नगर निगम के विशेष संदर्भ में

सार

पर्यावरण मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है। मनुष्य चाहकर भी इससे अपने आपको अलग नहीं कर सकता। जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति पर्यावरण में ही अपने सभी कर्तव्यों को पूर्ण करता है। प्रस्तुत अध्ययन में पर्यावरणीय गतिविधियों का मानव पर प्रभाव को स्पष्ट किया गया है। जिस पर्यावरण में हम रहते हैं, खाते हैं, पीते हैं अर्थात अपनी दिनचर्या पूर्ण करते हैं, वह आज दूषित हो गया है। मानव स्वार्थवश आज पर्यावरण को क्षति पहुंचाकर अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहा है। वह इस बात से अनभिज्ञ है कि उसके कारण भावी पीढ़ी कितना प्रभावित होगी। यही कारण है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० स्कूली पाठ्यक्रम में पर्यावरण जागरूकता और इसके संरक्षण व सतत् विकास के प्रति संवेदनशीलता के उचित एकीकरण पर जोर देती है। प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के छात्र एवं छात्राओं व कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं है।

मूल शब्दः *पर्यावरण, पर्यावरणीय गतिविधियां, पर्यावरण जागरूकता, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, संरक्षण, संवेदनशीलता।*

प्रस्तावनाः पर्यावरण जीवन का आधार व अभिन्न अंग है। अतः हम अपने इस अंग को सुरक्षित रखें तभी हम अच्छे जीवन की कल्पना कर सकते हैं। पर्यावरण व्यक्ति के हर पहलू पर अपना स्पष्ट प्रभाव छोड़ता है। दिन-प्रतिदिन के कार्य हम इसी पर्यावरण में करते हैं। हमारा यह नैतिक कर्तव्य है कि हम अपने इस पर्यावरण के प्रति सजग और सचेत हो। जीवों का अपना भौतिक एवं रासायनिक अस्तित्व होता है। वे स्वयं नियंत्रित एवं स्वयं चालित होते हुये भी अपने चारों ओर विद्यमान पर्यावरण पर निर्भर होते हैं। जीवों के चारों ओर उपस्थित समस्त कारक जो उन्हें प्रभावित करते हैं वातावरण का सृजन करते हैं। वस्तुतः वातावरण एवं जीव एक ही सिक्के के दो पहलू हैं एवं एक दूसरे के पूरक हैं। एक के बगैर दूसरे की कल्पना करना असंभव है, क्योंकि जीवों का अस्तित्व उसके चारों ओर पाए जाने वाले वातावरण पर आधारित है (**जोशी, 2022**)।

किसी भी समाज या देश में परिवर्तन या जन चेतना का सबसे सफल माध्यम शिक्षा ही रही है। यही कारण है कि पृथ्वी पर पर्यावरण की रक्षा के लिए पर्यावरण शिक्षा को विभिन्न स्तर के पाठ्यक्रम में शामिल की गई है। यूनेस्को कार्य समिति (1970) तथा मानव पर्यावरण पर स्टॉकहोम (1972) में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में भी पर्यावरण अध्ययन कार्यक्रम पर जोर देने की बात कही गई है। यूनेस्को के अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन (1977) में पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्यों का प्रतिपादन किया गया। इसके साथ-साथ राष्ट्रीय स्तर पर भी पर्यावरण संरक्षण के लिए विभिन्न आयोग व समितियों के द्वारा पाठ्यक्रम में भारतीय सांस्कृतिक एवं मूल्यपरक शिक्षा को सम्मिलित करने का सुझाव दिया गया (UNESCO, 1976)(**जोशी, 2022**)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 (संशोधित 1992) में पर्यावरण संरक्षण को एक कोर विषय के रूप में शामिल किया गया। 2006 में सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के आलोक में पर्यावरण शिक्षा को स्नातक

स्तर पर भी सम्मिलित किया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पर्यावरणीय मुद्दों और बहुविषयकता के माध्यम से संभावित ख़तरों से पर्यावरण को संरक्षित करने के तरीकों और साधनों को जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है (**सिंह, 2020**)।

संबंधित साहित्यों का अध्ययनः

मिश्रा (2022) ने अपने शोध ''ए स्टडी ऑफ एनवायरमेंटल अवेयरनेस इन सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स ऑफ छत्तीसगढ़ बेस्ड ऑन कल्चर, टाइप ऑफ स्कूल एंड जेंडर'' में पाया कि छत्तीसगढ़ के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में पर्यावरण जागरूकता (72%) के लिए संस्कृति, लिंग और स्कूल के प्रकार ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

देवी (2022) ने अपने शोध विषय "उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के बीच पर्यावरणीय सामाजिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन" में इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि प्रयागराज जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के बीच पर्यावरणीय सामाजिक चेतना का समग्र स्तर काफी अधिक है। यहां के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के बीच पर्यावरणीय सामाजिक चेतना का एक सामान्य स्तर है, जबकि विज्ञान और कला के छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है, परंतु यह स्तर लड़कों की अपेक्षा लड़कियों में अधिक है।

सैनी एवं मेधवाल (2022) ने अपने शोध विषय "माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन" में इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि सरकारी विद्यालयों के छात्रों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता निजी विद्यालयों के साथियों से अधिक है।

पारीक (2022) ने अपने शोध ''पर्यावरण शिक्षा को माध्यमिक पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से जोड़ने से विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' में यह निष्कर्ष निकाला गया कि पर्यावरण शिक्षा को पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से जोड़ना सरकारी व निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता को विकसित करने में सहायक है।

यादव और कुमार (2022) ने अपने शोध ''अयोध्या जिले में स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं का पर्यावरण के प्रति जागरूकता का एक अध्ययन'' में इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि पर्यावरण जागरूकता के प्रति छात्राओं की तुलना में छात्र अधिक जागरूक हैं। छात्रों का पर्यावरण के प्रति दृष्टिकोण छात्राओं की तुलना में अधिक अच्छा है।

कुमार (2021) ने अपने शोध ''उच्चतर माध्यमिक युवा स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं के पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता- एक अध्ययन'' में इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि मानव पर्यावरण शिक्षा के प्रति संवेदनशील बने तथा पर्यावरण संरक्षण व संवर्धन के प्रति पहले से अधिक क्रियाशील बने। पर्यावरण शिक्षा के नवीन प्रत्यय पर जोर देकर अनिवार्य किया जाय।

वरमुला और देवेंद्र (2021) ने अपने शोध ''ए स्टडी ऑफ द एनवायरमेंटल अवेयरनेस ऑफ सेकेंडरी ग्रेड स्टूडेंट्स'' में पाया कि माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित लड़कों और लड़कियों में पर्यावरण जागरूकता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है, लेकिन सरकारी विद्यालयों के छात्रों की तुलना में निजी विद्यालयों के छात्रों में पर्यावरण जागरूकता और नैतिकता अधिक दिखाई देती है।

शाहिदुल्ला (2020) ने अपने शोध ''ए स्टडी ऑफ एनवायरमेंटल अवेयरनेस एमंग द सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स'' में 10वीं कक्षा के छात्रों में पर्यावरण जागरूकता का आकलन किया। उन्होंने 10वीं कक्षा के छात्रों और छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया।

सिंह (2020) ने अपने लेख ''पर्यावरण पर नई दृष्टि जरुरी'' में कहा कि बहुविषयक पढ़ाई पर्यावरण समझ विकसित करने में मददगार होती है।

डैनियलराजा (2019) ने अपने शोध ''ए स्टडी ऑफ एनवायरमेंट अवेयरनेस अहफ स्टूडेंट्स एट हायर सेकंडरी लेवल'' में इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि छात्रों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण उच्च स्तर का है। जबकि पर्यावरण जागरूकता में छात्रों की उपलब्धि उच्च कोटि की नहीं पायी गयी।

Journal of Research in Education ISSN (P): 2347-5676 | ISSN (O) 2582-2357
JUNE - 2024 | VOL.12, No.1

शर्मा (2018) ने अपने शोध ''ए स्टडी ऑन द एनवायरमेंटल अवेयरनेस एमंग द सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन गोलाघाट डिस्ट्रिक्ट ऑफ असम'' में पाया कि हाई स्कूल के लड़के और लड़कियों के बीच पर्यावरण जागरूकता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। इसी प्रकार के सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों में भी पर्यावरण जागरूकता के प्रति उनके दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। परन्तु शहरी और ग्रामीण हाई स्कूल के छात्रों की पर्यावरण जागरूकता में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया।

धन्या और पंकजम (2017) ने अपने शोध ''एनवायरमेंटल अवेयरनेस एमंग सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स'' रिपोर्ट में बताया कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्रों में पर्यावरण जागरूकता की तुलना में निजी माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों में पर्यावरण जागरूकता काफी अधिक थी। यह भी देखा गया कि ईको-क्लब के छात्रों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता अन्य छात्रों की तुलना में अधिक थी।

बिन्ह नगा (2016) ने अपने शोध ''एनवायरमेंटल अवेयरनेस ऑफ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन होनी'' में बताया कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में पर्यावरण जागरूकता, लिंग और उस क्षेत्र से प्रभावित नहीं थी जहाँ स्कूल स्थित है।

मलिक (2015) ने अपने शोध ''पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता एवं अभिवृत्ति का संस्थान प्रकार के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन'' में बताया कि अनुदानित एवं स्ववित्त पोषित संस्थानों में अध्ययनरत बी. एड. के विद्यार्थियों के बीच पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता एवं अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया।

अध्ययन का औचित्यः

पर्यावरण की समस्या केवल हमारे देश की समस्या नहीं बल्कि आज यह एक वैश्विक समस्या बन चुकी है। आज विश्व भर के पर्यावरण विशेषज्ञ, बुद्धिजीवी, राजनेता और सरकारें इस समस्या से जूझ रहे हैं और बिगड़ते हुए पर्यावरण की समस्या को सुलझाने का प्रयास कर रहे हैं। इस समस्या का दो ही समाधान है जन-जन तक पर्यावरण के विषय में जानकारी प्रदान करना और नैतिक

चेतना पैदा करना। जब तक समाज में पर्यावरण के विषय में जागरूकता नहीं लाई जाएगी, तब तक पर्यावरण को सुरक्षा प्रदान नहीं की जा सकती। उक्त कार्य तब तक कोई एक व्यक्ति या सरकार भी नहीं कर सकती जब तक पूरे मानव-समाज अपनी जिम्मेदारी समझकर इसके लिए प्रयास नहीं करेगा। पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से मानव को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाया जा सकता है।

अभी तक ज्ञात शोधों के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रदूषण आज के युग में सबसे भयंकर समस्या है क्योंकि पर्यावरण विनाश इसी तरह चलता रहा तो मानव जीवन संकटग्रस्त हो जाएगा। पर्यावरण ह्रास का मानवीय स्वास्थ्य एवं कार्य क्षमता पर कुप्रभाव पड़ा है। अतः पर्यावरण का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके प्रबंधन एवं नियोजन क्षेत्रीय पारिस्थितिकी के अनुसार होते हैं। प्रदूषण की समस्या से लड़ने की रणनीति तैयार करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वाधान में अनेक सम्मेलन हुए हैं। 1972 में स्टॉकहोम में, 1985 में वियाना में, 1987 में मॉन्ट्रियल में, 1993 में रियोडिजेनेरों में, क्योटो संधि- 1997, पृथ्वी सम्मेलन-2002, मॉन्ट्रियल सम्मेलन-2005 (कनाडा) में आयोजित किये गये। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक संस्थाएं एवं संगठन विश्व समुदाय में पर्यावरण चेतना जागृत करने की दिशा में संलग्न है **(त्रिपाठी, 2005)**।

समस्या कथनः

उपरोक्त समस्याओं को दृष्टिगत करते हुए प्रस्तुत अध्ययन का शीर्षक निम्न है: "उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययनः सहरसा नगर निगम के विशेष संदर्भ में।"

उद्देश्यः

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्न प्रकार हैंः

1. छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाः

प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित परिकल्पनाएं निर्मित की गई हैंः

1. छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सीमांकनः

वर्तमान अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता के प्रति अध्ययन का प्रयास किया गया है, परंतु उसकी कुछ सीमाएं हैं, जो निम्नलिखित हैंः

- **परिक्षेत्र–** अध्ययन के लिए सहरसा नगर निगम में स्थित पांच उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है।
- **विद्यालय–** प्रस्तुत अध्ययन में बिहार सरकार के राजकीय और राजकीयकृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को लिया गया है।
- **न्यादर्श–** न्यादर्श के रूप में विद्यार्थियों की संख्या 100 लिया गया है।
- **कक्षा–** कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के कक्षाओं (11वीं एवं 12वीं) के विद्यार्थियों की संख्या 50-50 है, जिसमें 25-25 छात्र एवं 25-25 छात्राएं हैं।
- **भाषा–** प्रस्तुत अध्ययन हिन्दी माध्यम वाले उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तक ही सीमित हैं।

शोध प्रविधिः

प्रस्तुत अध्ययन में मात्रात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

क. जनसंख्याः सहरसा नगर निगम में स्थित बिहार सरकार के राजकीय और राजकीयकृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले 11 वीं और 12 वीं कक्षा के कला एवं विज्ञान वर्ग के समस्त विद्यार्थी।

ख. न्यादर्शः इस अध्ययन हेतु सहरसा नगर निगम के 5 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से 100 छात्र-छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया।

ग. उपकरणः अध्ययन हेतु उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के छात्र-छात्राओं की पर्यावरण जागरुकता के मापन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

ध. सांख्यिकीय प्रविधियांः अध्ययन में एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण करने हेतु मध्यमान, मानक विचलन और टी- परीक्षण का प्रयोग किया गया।

आंकड़ों का संकलन, परिणाम और विश्लेषणः

प्रस्तुत अध्ययन को संपन्न करने हेतु पर्यावरण के प्रति जागरूकता की परीक्षा के लिए ११वीं एवं १२वीं कक्षा के कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं का प्रतिचयन किया गया।

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयोज्यों ने अपनी व्यक्तिगत क्षमता के आधार पर प्राप्तांक प्राप्त किये। प्राप्तांकों की गणना करने पर जो परिणाम प्राप्त हुआ उसे निम्न सारणी के माध्यम से दर्शाया गया हैः

सारणीः1; छात्र और छात्राओं की पर्यावरण जागरुकता के सांख्यिकीय मानक।

विद्यार्थी	N	M	S.D.	t-ratio
छात्र	50	43.02	3.87	0.855
छात्रा	50	42.30	4.52	

सारणीः2; विज्ञान एवं कला के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता के सांख्यिकीय मानक।

विद्यार्थी	N	M	S.D.	t-ratio
विज्ञान संकाय	50	42.80	4.9	0.045
कला संकाय	50	42.48	3.41	

सारणी-2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता परीक्षण के आधार पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन व टी- अनुपात ज्ञात किया गया। कला वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान 42.48, मानक विचलन 3.41 है जबकि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान 42.8, मानक विचलन 4.9 है। ज-अनुपात 0.045 है। इनके विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है। अर्थात् कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में समानता है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि इस शोध कार्य के उद्देश्य "उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता" की पूर्ति प्रस्तुत अध्ययन कार्य द्वारा की गई है। शोध से जो आंकड़े प्राप्त हुए हैं, उनसे सिद्ध होता है कि कला और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः यहां शोधार्थी द्वारा निर्मित शून्य परिकल्पना स्वीकृत हुई। छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

निष्कर्षः

पर्यावरण जीवन का अभिन्न अंग है। अतः हम अपने इस अंग को सुरक्षित रखें तभी हम अच्छे जीवन की कल्पना कर सकते हैं। पर्यावरण व्यक्ति के हर पहलू पर अपना स्पष्ट प्रभाव छोड़ता है। दिन-प्रतिदिन के कार्य हम इसी पर्यावरण में करते हैं। हमारा यह नैतिक कर्तव्य है कि हम अपने पर्यावरण के प्रति सजग और सचेत हों।

अध्ययन परिणामों की विवेचना से स्पष्ट है कि छात्र-छात्राओं और विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई विशेष अंतर नहीं है। इसी प्रकार कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में भी पर्यावरण के प्रति जागरूकता में मामूली अंतर है।

अध्ययन में शहरी क्षेत्रों के विद्यालयों से न्यादर्शों को संकलित किया गया है और परीक्षण के समय विद्यार्थियों की आयु सामाजिक स्थिति, वंशानुक्रम, स्वास्थ्य आदि बुद्धि को प्रभावित करने वाले तत्वों पर ध्यान नहीं दिया है।

संदर्भः

- बिन्ह नगा, जी. (2016); द एनवायरमेंटल अवेयरनेस ऑफ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन होनी; Journal of Viet-Env-; अंक - 08(01); पृष्ठः 62–64
- डैनियलराजा, आर. (2019); ए स्टडी ऑफ एनवायरमेंटल अवेयरनेस ऑफ स्टूडेंट्स एट हायर सेकंडरी लेवलय सनलेक्स- इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनय अंक- 07(03); पृष्ठः 6–10
- देवी, कुसुम (2022); उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के बीच पर्यावरणीय सामाजिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययनय इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन इंजीनियरिंग एंड साइंसय अंक 10 (7); पृष्ठः 748–754
- धन्या, सी. एच. और पंकजम, आर. (2017); एनवायरमेंटल अवेयरनेस एमंग सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्सय इंटरनेशनल जर्नल आफ रिसर्च- ग्रंथालयय अंक- 05 (05); एस. इस., पृष्ठः 22–26
- जोशी, डॉ. रतनय पर्यावरण अध्ययनय आगरा, साहित्य भवन पब्लिकेशंसय पृष्ठः 11 Ibid, पृष्ठः 158
- कौशिक, अनुभा एवं कौशिक, सी.पी.(2022); पर्यावरण अध्ययनय द्वितीय संस्करणय न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स
- कुमार, मुकेश (2021); उच्चतर माध्यमिक युवा स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं की पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता- एक अध्ययनय एकेडमिक सोशल साइंसय अंक -7(4); पृष्ठः 32–35
- मलिक, सिंह (2015); पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता एवं अभिवृत्ति का संस्थान प्रकार के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन, इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ मैनेजमेंट, सोशियोलॉजी एंड ह्यूमैनिटी, अंक-06(06); पृष्ठः 205–209
- मिश्रा, रश्मि (2022)य ए स्टडी अहन एनवायरमेंटल अवेयरनेस इन सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स आंफ छत्तीसगढ़ बेस्ड आंन कल्चर, टाइप आंफ स्कूल एंड जेंडरय इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसीप्लिनरी एजुकेशनल रिसर्च, अंक - 11, पृष्ठः 44–47
- पारीक, कल्पना (2022); पर्यावरण शिक्षा को माध्यमिक पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से जोड़ने से विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन इंस्पीरा-जर्नल ऑफ मॉडर्न मैनेजमेंट एंड इंट्रीप्रेनशीपय अंक - 12(01); पृष्ठः 195–200
- शाहिदुल्ला, ए. (2020); ए स्टडी ऑफ एनवायरमेंटल अवेयरनेस एमंग द सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्सय जरनल ऑफ इंटरडिस्प्लेनरी साइकल रिसर्चय अंक -XII (XII); पृष्ठः 79–87
- शर्मा, मनोज कुमार (2018); ए स्टडी ऑन द एनवायरमेंटल अवेयरनेस एमंग द सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन गोलाघाट डिस्ट्रिक्ट ऑफ असमय जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजिज एंड इन्नोवेटिव रिसर्चय अंक-05(04); पृष्ठः 918- 922
- सैनी, एवं अन्य (2022); माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन इंटरनेशनल जर्नल आफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्सय अंक -10(5); पृष्ठः 191–195
- सिंह, विपुल (2020); पर्यावरण पर नई दृष्टि जरुरी नई दिल्ली, आउटलुकय 8अगस्त https://www-outlookhindi-com/amp/view/general/new- education- policy- opinion- clear- eyes- should- be- for- environment-50918 DOI: 19 May, 2023
- त्रिपाठी, एवं दयाशंकर (2005); पर्यावरण अध्ययन पटना - वाराणसी, मोतीलाल बनारसी दास पब्लिशर्स।
- यादव, राम सरदार और कुमार, मुकेश (2022); अयोध्या जिले में स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं का पर्यावरण के प्रति जागरूकता का एक अध्ययन एकेडमिक सोशल साइंसय अंक -08(01); पृष्ठः 82–85

Journal of Research in Education ISSN (P): 2347-5676 | ISSN (O) 2582-2357
JUNE - 2024 | VOL.12, No.1

- UNESCO (1976); International Workshop on Environmental Education, Belgrade, Yugoslavia, October, 1975, Final Report; p-60, UNESCO, Paris
- वरमुला, एम. और देवेंद्र, बी. (2021); ए स्टडी ऑफ द एनवायरमेंटल अवेयरनेस ऑफ सेकेंडरी ग्रेड स्टूडेंट्सय Nat- Volatiles and Essent- oils; अंक-08 (06); पृष्ठ: 3327-3352

Journal of Research in Education ISSN (P): 2347-5676 | ISSN (O) 2582-2357
JUNE - 2024 | VOL.12, No.1

Dr. Anita Shrivastava
Assistant Professor
Department of Economics,
Patna University
Email- anita.2602shrivastava@gmail.com

Dr. Saroj Sinha
Professor,
Department of Economics,
Patna University

Tulika Sinha
Student,
Department of Economics,
Patna University

8

An Emperical Study on "Ayushman Bharat Yojna with Special Reference to Lok Nayak Jai Prakash Hospital, Patna

Abstract

"Right to health" is central to exercise the basic human rights. However, our constitution is yet to recognize health as a fundamental right. Since the submission of Bhore Committee report (1946), efforts are made by central/state Governments to provide health care through countrywide network of three tier health-care institutions and various national health programs. Success stories of eradication of smallpox, dracunculiasis, regional elimination of leprosy, neonatal tetanus, controlling diseases such as malaria/other vector-borne diseases, and reduction in maternal/infant mortality are few of its achievements.

However, the system has failed to provide quality curative and rehabilitative care to the masses, especially in remote areas leading to inequality and inequity in access of health care.

In India, around 6% do not seek health care due to financial reasons, and among those who do, experiences are often financially catastrophic